कर्ण पिशाचिनी साधना

रातों रात ही प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच गया था मैं... बड़े से बड़ा सेठ भी गिड़गिड़ाता था मेरे सामने... यजमान वृत्ति से पेट भरने वाला मैं गरीब ब्राह्मण अब त्रिकालज्ञ माना जाने लगा था...और फिर मैंने कहा-

- **रेल के डिब्बे में अनजान यात्री से - 'तुम कत्ल करके भाग रहे हो'।**
- **एक सौम्य स्त्री से - 'तुम कुल्टा हो पर पुरुष से अवैध सम्बंध हैं तुम्हारे'।**
- **एक निर्दोष से व्यक्ति से - 'आज शाम को ही अपने मित्र की हत्या की योजना है तुम्हारी'।**
- **एक मासूम षोडशी से - 'कल रात ही अपने प्रेमी के साथ तुम घर से भाग आई हो'।**
- **यह सब गोपनीय जानकारी आप भी हासिल कर सकते हैं....इस कर्ण पिशाचिनी साधना से...**

छः माह बीत चुके थे मुझे गांव छोडे हुए। घर की दरिद्रता से विकल होकर मैं जीवन से विरक्त हो चुका था। अक्सर मैं सोचता - मेरे पूर्वज उच्चकोटि के ब्राह्मण थे। उनके पास अलौकिक सिद्धियां थीं, ज्योतिष के क्षेत्र में वे अद्वितीय थे। काल को अपने चिन्तन से उन्होंने बांध रखा थाा, पर आज वे विद्याएं कहां है ?

अपने ब्राह्मणत्व पर लांछन लगते देखना मुझे असह्य था। मैंने तो निश्चय कर लिया था कि मुझे उन विशिष्ट योगियों तक पहुंचना है जिनके पास अलौकिक ज्ञान है, जिनसे मैं कुछ साधनात्मक बल प्राप्त कर सकूं।

अमरकंटक के पास विचरण करते हुए एक दिन मुझे सद्गुरुदेव जी के दर्शन हो गए। कोई साधनात्मक शिविर चल रहा था। मौका देखकर मैंने उनसे भेंट की और अपनी व्यथा से अवगत कराया। मेरे ज्योतिष के प्रति रूझान को देखकर शायद उनका हृदय पसीज उठा, मुस्कुराकर बोले, 'तू कर्णपिशाचिनी सिद्ध कर ले'।

पिशाचिनी का नाम सुनते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गये। सुना था कि यह वाममार्गी साधना है और अत्यन्त वीभत्स तरीके से सम्पन्न की जाती है। सारे वैदिक कर्म त्याग देने पड़ते हैं और साधना खण्डित कर देने पर तुरंत मृत्यु हो जाती है। साथ ही साथ कर्णपिशाचिनी को सिद्ध कर लेने के बाद भी उसकी काम पिपासा शान्त करनी पड़ती है और उसमें आनाकानी

करने पर वह गला घोंट देती है। ये सभी कर्म मेरे पवित्र आनुवांशिक संस्कारों से भिन्न थे और मैं कल्पना में भी यह घृणित कार्य नहीं कर सकता था।

मेरे सारे संशय सद्गुरुदेव जी भांप गये। अब उन्होंने एक नवीन रहस्य खोला, 'कर्णपिशाचिनी साधना को दक्षिणमार्गी तरीके से भी सम्पन्न कर सकते हैं और यह तुम्हारी ब्राह्मण वृत्ति के अनुकूल भी रहेगा, पर इसके लिये तुम्हें सर्वप्रथम गुरु दीक्षा लेनी पड़ेगी'।

दीक्षा लेकर साधना रहस्यों को समझने के बाद मैं घर लौट आया और शुभ मुहूर्त में साधना आरंभ की।

पिशाचिनी शब्द से घबराने की जरुरत नहीं है, यह एक योनि है, जैसे मनुष्य योनि है, देव योनि है, गन्धर्व योनि हैं, ठीक उसी प्रकार यह भी है, मगर उन्हें पूर्ण विधि और ज्ञान कहीं से भी प्राप्त नहीं हो पाया है, इसीलिए वे उन्हें पूर्ण विधि और ज्ञान कहीं से भी प्राप्त नहीं पाया है इसीलिए वे साधना में कई बार असल हो जाते हैं कर्ण पिशाचिनी के माध्यम से आप किसी भी व्यक्ति के भूतकाल को एक क्षण में जान सकते हैं और उसके जन्म से लेकर आज तक के गोपनीय से गोपनीय रहस्य भी स्पष्ट कर सकते हैं इस दृष्टि से यह साधना अपने आप में अदभुत है हजारों लोगों की मांग के आधार पर इस साधना को हम इस पत्रिका के पन्नों पर प्रस्तुत कर रहे हैं

कर्ण पिशाचिनी साधना से थोड़े बहुत रूप में प्रत्येक भारतीय परिचित हैं। वर्तमान युग में जब चमत्कार ही सिद्धि का पर्याय हो गया है, तब यह साधना प्रत्येक अविश्वासी व्यक्ति को पूर्ण रूप से विश्वास दिलाने में समर्थ है।

पर यह साधना गोपनीय रही है, जिनको ज्ञान है, उन्होंने इस साधनां को उजागर करना ठीक नहीं समझा, क्योंकि इससे उनके हितों पर आघात होता था।

इन पन्नों पर यह गोपनीय साधना पूर्ण प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट है, साधकों को चाहिए कि वे योग्य गुरु के निर्देशन में ही यह साधना सम्पन्न करें, अकेले नहीं।

जोधपुर में रामकिशन नाम का एक व्यक्ति है, जो आते ही आपको-आपके नाम से पुकारेगा और पूछेगा, कि आप अमुक स्थान से आये हैं, आपकी कार का नम्बर यह है आदि-आदि।

टोंक के पास स्वामी गिरजा स्वामी हैं जो कि व्यक्ति को देखते ही उसके भूतकाल के बारे में अक्षरशः सही बता देते हैं और वे यहां तक बता देते हैं, कि एक दिन पहले आपने क्या भोजन किया है, कौन सी सब्जी खाई है, और यहां तक कि प्रातः आपने अपनी पत्नी से क्या-क्या बातें की हैं।

लखनऊ के पास एक तांत्रिक रहते हैं जिनका नाम अवधूत बाबा है। वे बीती हुई कोई भी घटना ज्यों की त्यों बता देते हैं चाहे वह घटना कितनी ही गोपनीय है।

ये सारे उदाहरण भूतकाल की घटनाओं से सम्बंधित हैं और भारत में ऐसे सैकड़ों साधु, युवक व युवतियां हैं जो कि अनजान व्यक्ति को देखकर उसके भूतकाल के बारे में सब कुछ बता देते हैं। यह अलग बात है, कि वे इनके लिए हाथ देखने का, जम्नपत्री देखने का या ललाट की रेखाएं देखने काढोंग करके आपको भूतकाल बतलाते हैं, परंतु सही बात है कि उन्हें कर्ण पिशाचिनी सिद्धि होती है जो कि अब गोपनीय नहीं रही और काफी लोग इस प्रकार की साधना सीखकर इधर-उधर चमत्कार दिखाते हैं।

मेरे परिचित युवक हैं- बोधसिंह जो यहीं से कर्ण पिशाचिनी साधना सीखकर तीन वर्ष पहले अमेरिका चले गए थे। पिछली बार जब मैंने उन्हें देखा, तो वे लखपति हो चुके थे। न्यूयार्क में उन्होंने अपना स्वयं का मकान खरीद लिया है, २-३ उनकी कारें हैं और अमेरिका में वे बोधसिंह पण्डित के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी विशेषता यह है कि वे फर्राटे के साथ लच्छेदार अंग्रेजी बोल लेते हैं और किसी भी अनजान अमेरिकन व्यक्ति से मिलते ही उसे उसके नाम को उच्चरित कर उसे आश्चर्यचकित कर देते हैं। इसके बाद बोध सिंह पण्डित उसके पुत्र का नाम, पत्नी का नाम, कार्य, आजीविका तथा घर में क्या-क्या सामान कहां-कहां रखा है, सही-सही बता देते हैं। यह सुनते ही अमेरिकन व्यक्ति उनके पण्डित्य और ज्ञान के सामने प्रभावित होकर झुक जाता है और उसे त्रिकालदर्शी मान लेता है, जबकि उसे मात्र कर्णपिशाचिनी साधना ही ज्ञात है। पर इसके माध्यम से भूतकाल की छोटी से छोटी घटना साधक बता देता है। जब सामने वाला व्यक्ति प्रभावित हो जाता है फिर वह भविष्यकाल के बारे में गप्पें लगाने लग जाता है। चूंकि सामने वाला व्यक्ति पूरी तरह से प्रभावित होता है अतः उसकी भविष्यवाणियों पर भी पूरा-पूरा विश्वास कर लेता है, जबकि भविष्यकाल में बताई हुई घटना कतई सही नहीं उतरती, क्योंकि उसे ज्योतिष का नहीं के बराबर ज्ञान होता है।

वास्तव में कर्ण पिशाचिनी साधना कोई भी व्यक्ति सीख



सकता है और जब वह यह साधना सिद्ध कर लेता है तो मन में ही प्रश्न करने पर कर्ण पिशाचिनी उसके कान में उसको सही-सही उत्तर कह देती है जो कि उसे स्पष्ट सुनाई देता है। परंतु साधक के पास जो व्यक्ति बैठे होते हैं उनको कुछ भी सुनाई या दिखाई नहीं देता।

उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को देखते ही साधक मन ही मन प्रश्न करता है, कि यह व्यक्ति कौन है और क्या नाम है? तो उसी क्षण उसके कान में स्पष्ट आवाज आयेगी कि इस व्यक्ति का नाम अमुक है और यह अमुक व्यापार करता है।

जीवन में जब इस प्रकार के तथाकथित साधु या त्रिकालदर्शी मिलें, जो कि भूतकाल सही-सही बता देते हों तो समझ जाना चाहिए कि उसे कर्ण पिशाचिनी साधना सिद्ध है पर भविष्य के बारे में बताई हुई उसकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

मैं आगे कर्ण पिशाचिनी साधना प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं कि प्रामाणिक है पर साधक को मेरी गंभीरतापूर्वक सलाह है कि वह किसी योग्य गुरु के निर्देशन में ही यह साधना सम्पन्न करें, क्योंकि कई बार साधना अधूरी रह जाने पर आदमी या साधक परेशानी में भी पड़ सकता है।

प्रयोग एक

यह प्रयोग ११ दिन का है। इसमें कांसे की थाली में सिन्दूर से त्रिशूल बनाकर उस पर **'कर्ण पिशाचिनी यंत्र'** स्थापित करें। उसका पूजन करे और दिन में शुद्ध गाय के घी का दीपक जला कर **'काली माला'** से ग्यारह सौ मंत्र जप करे, रात में भी इसी प्रकार त्रिशूल कापूजन कर घी और तेल दोनों का दीपक जलाकर ग्यारह सौ मंत्र जप करें।

इस प्रकार ग्याहर दिन तक प्रयोग करने पर कर्ण पिशाचिनी सिद्ध हो जाती है और उसे कान में प्रश्न का उत्तर सही-सही देती रहती है। इसमें साधक को एक समय भोजन करना चाहिए और यथासम्भव काले वस्त्र धारण करने चाहिए। साधना काल में व्यर्थ बातचीत, स्त्री गमन, पर-स्त्री से बातचीत आदि सर्वथा वर्जित है।

मंत्र

॥ॐ नम: कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनि मम कर्णे अवतरावतर अतीतानागतवर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचिनी स्वाहा॥

OM NAMHA KARNA PISHACHINI AMOGH SATYAVADINI MAM KARNE AVATARAVATAR ATITANAGTVARTMANANI DARSHAYA DARSHAYA MAM BHAVISHYAM KATHYA KATHYA HREEM KARNAPISHACHINI SWAHA

प्रयोग दो

यह प्रयोग भी कर्ण पिशाचिनी से सम्बंधित है। आम की

लकड़ी से बने पट्टे पर गुलाल बिछाकर **'कर्ण पिशाचिनी यंत्र'** स्थापित करे, तथा अनार की कलम से रात को एक सौ आठ बार मंत्र लिख कर मिटाता जाए और लिखते समय मंत्र का उच्चारण भी करता जाए। अन्त वाले मंत्र का **'काली माला'** से पंचोपचार पूजन करके इस मंत्र का ग्यारह सौ बार उच्चारण करें, फिर उस पट्टे को अपने सिरहाने रखकर सो जाए, इस पकार लगातार इक्कीस दिन करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

साधक को चाहिए कि यह मंत्र होली, दीपावली या ग्रहण से प्रारंभ करके इक्कीस दिन तक इसका प्रयोग करें। यह मंत्र खाट पर बैठकर भी लिख सकता है और अन्त में उस पट्टे को सिरहाने देकर उसी खाट पर सो सकता है।

इस बात का ध्यान रखें कि उस कमरे में उसके अलावा और कोई न सोए और जहां पर बेठ कर मंत्र लिखे बिना उठे वहीं पर उसे सो जाना चाहिए।

मंत्र

// ॐ नमः कणपिशाचिनी मत्तकरिणी प्रवेषे अतीतानगतवर्तमानानि सत्यं कथय मे स्वाहा //

OM NAMAH KARNAPISHACHINI MATTKARNI PRAVESHE ATEETANAGATVARTMANANI SATYAM KATHYA MEY SWAHA

प्रयोगतीन

इस प्रयोग में साधक को चाहिए, कि वह काले ग्वारपाठे को अभिमंत्रित कर हाथों-पावों में लेप कर काला वस्त्र बिछा कर उस पर **'कर्ण पिशाचिनी यंत्र'** स्थापित करें। इस मंत्र का नित्य पांच हजार जप **'काली माला'** से करें, इस प्रकार इक्कीस दिन में यह मंत्र सिद्ध हो जाता है और उसे कान में सारे तथ्य स्पष्ट सुनाई देने लग जाते हैं।

मंत्र

// ॐ ह्रीं नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि वद वद स्वाहा //

प्रयोग चार

विधि तीसरे प्रयोग की तरह ही है, पर निम्नलिखित मंत्र का प्रयोग किया जा सकता है।

मंत्र

// ॐ ह्रीं सनामशक्ति भगवति कर्णपिशाचिनि चंडरोपिणि वद वद स्वाहा //

प्रयोग -पांच

साधक को चाहिए, कि वह मिट्टी और गाय के गोबर से पृथ्वी को लीप कर उस पर बहुत सा कुश बिछा दे और **'भगवती कर्ण पिशाचिनी यंत्र'** का पंचोपचार पूजन कर **'काली माला'** से नित्य दस हजार मंत्र जप करें।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक साधना करने पर कर्ण पिशाचिनी सिद्ध हो जाती है।

मंत्र

// ॐ हंसो हंस : नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चण्डवेगिनि स्वाहा //

प्रयोग -छः

साधक लाल वस्त्र पहिन कर रात को **'कर्ण पिशाचिनी यंत्र'** को स्थापित कर घी का दीपक लगाकर नित्य **'काली माला'** से दस हजार मंत्र जप करे इस प्रकार इक्कीस दिन तक निम्नलिखित मंत्र ग्याहर हजार का जप करने से सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

मंत्र

// ॐ भगवति चंडकर्णे पिशाचिनि स्वाहा //

प्रयोग सात

यह प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है औ कहते हैं, कि व्यास जी ने स्वयं इस मंत्र को सिद्ध कर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की थी।

सर्वप्रथम आधी रात को अपने हृदय में कर्णपिशाचिनी देवी का ध्यान करके रक्त चंदन से मंत्र लिखना चाहिए और उस पर 'कर्ण पिशाचिनी यंत्र' को स्थापित कर, उसकी पर रक्त चंदन, बन्धूक-पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए तथा **'ॐ अमृतं कुरु कुरु स्वाहा'** इस मूंत्र से यंत्र को और लिखे हुए मंत्र का प्रोक्षण करना चाहिए। इसके बाद **'काली माला'** से निम्न मंत्र का जप करना चाहिए।

मंत्र

//ॐ कर्ण पिशाचिनि दग्धमीनबलिं गृहाण गृहाण मम सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा //

इसके बाद रात्रि को पांच हजार मंत्र जप करना चाहिए तथा प्रातः काल तर्पण करना चाहिए। तर्पण निम्न मंत्र से किया जाता है।

//ॐ कर्ण पिशाचिनी तर्पयामि स्वाहा //

इस प्रकार एक लाख जप करना चाहिए और उसका दशांश होम करने के बाद फिर दशांश तर्पण करना चाहिए।

ऐसा करने पर निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है और कठिन से कठिन से कठिन समस्या और गोपनीय भूतकाल भी उसे स्पष्ट दिखाई देता है।

वस्तुतः ये साधनाएं आसान दिखाई देती हैं परंतु थोड़ी सी भी त्रुटि साधक के लिये नुकसानदायक हो सकती हैं, परंतु इसमें कोई दो राय नहीं, कि ऊपर जो सात प्रयोग बताए गए हैं, वे प्रमाणिक हैं। साधकों ने मेरे सामने सिद्ध किये हैं और उन्हें तत्क्षण सफलता मिली है अतः इनके बारे में संदेह करना व्यर्थ है। प्रत्येक प्रयोग अलग-अलग है, प्रत्येक को सम्पन्न करने के पश्चात यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें।

परंतु फिर भी साधकों को यह सलाह दी जाती है, कि उन्हें वे किसी योग्य गुरु के समीप बैठ कर उनके सानिन्ध्य में ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए। यद्यपि ये साधनाएं गोपनीय रही हैं परंतु इस पत्रिका के माध्यम से पहली बार स्पष्ट की गई हैं, जो कि प्रामाणिक है। साधना की नवीं रात्रि को मेरे गालों पर एक झन्नाटेदार तमाचा पड़ा। मैं संज्ञाशून्य होते-होते बचा। नजरें उठाई तो वही भयानक स्त्री खड़ी थी। कड़ककर उसने कहा, 'बन्द कर यह मंत्र जप। क्या मिलेगा तुझे इससे? अब अगर यह कार्य किया तो गला दबोचकर तेरा खून पी जाऊंगी' और वह अट्टहास कर उठी।

मेरे पुनः मंत्र जप करने पर उसने मेरे गले को पकड़ लिया। गले की नसें उभर आईं। आंखें बाहर को निकलने लगी और पूरा शरीर कांपने लगा। मुंह से घरघराहट सी आवाज ही निकल रही थी। मृत्यु को स्पष्ट सामने अनुभव कर मैंने गुरुदेव के चरणों का स्मरण किया। तुरंत उसने हाथ हटा लिया और बाहर निकल गई। मेरी हिम्मत जवाब दे गई थी। पर गुरु आज्ञानुसार मैं पुनः दसवें दिन साधना में बैठा। आज तो कमाल ही हो गया। रात्रि में लगभाग दो बजे एक अतव सुन्दरी प्रकट हुई गुलाबी कंचुकी, गुलाबी ओढनी में वह सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा लग रही थी, उसने पूरे शरीर से मादक सुगंध प्रवाहित हो रही थी। एक क्षण को तो मैं विचिलित हुआ पर तुरंत गुरुदेव का स्मरण हो आया कि वह कर्णपिशाचिनी हर दृष्टि से मुझे डिगाने का प्रयत्न करेगी, पर मंत्र जप नहीं तोड़ना है।

तभी उसने अपना सिर मेरे कन्धे पर रख दिया और मेरे पूरे शरीर से बिजली सी दौड़ गई। उसकी मादक सुगन्ध से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हुए मैं मंत्र जप करता रहा।

आज साधना का अंतिम दिन था, और मेरी परीक्षा का भी। मंत्र जप आरंभ करते ही वह अप्सरा सी रूपसी सामने आ गई। आज उसने जी भर कर श्रृंगार किया था, हंसनी ग्रीवा और उन्नत वक्ष मानो आमंत्रण दे रहे थे, यौवन से भरा हुआ उसका शरीर ऐसा लग रहा था मानो कामदेव अपनी प्रत्यंचा टेढी कर पूरे विश्व पर विजय प्राप्त करने के लिए आतुर हो। निश्चय ही आज वह अपने रूप, यौवन और माधुर्य की त्रिवेणी ने मुझे डुबो देने को कटिबद्ध थी।

तभी उसने आगे बढकर मेरे गले में हाथ डाल दिया, स्पर्श होते ही जैसे मेरे पूरे रक्त में उबाल सा आ गया, मैं अटक-अटक कर मंत्र उच्चारण कर रहा था। उसके शरीर की महक मेरे पूरे अंतर को मथ रही थी। मैंने गुरुदेव को स्मरण किया और अचानक मेरी विवशता क्रोध में परिवर्तित हो गई। उस रूपसी के मेरी गोद में लेटने के बावजूद भी मैं पूरी शक्ति से मंत्रोच्चारण करने लगा।

अंतिम माला पूरी होते हेते उसने मेरे शरीर से खोलना आरंभ कर दिये, मेरे शरीर को पकड़कर कई बार भींचा, पर मैं अविचलित भाव से आसन पर स्थिर था। जप समाप्ति करते ही मेरा एक झन्नाटेदार तमाचा उस रूपसी के माल पर पड़ा।

वह सन्न रह गई, स्वप्न में भी उसे गुमान नहीं था कि उसका सौन्दर्य इस प्रकार प्रताड़ित हो जाएगा। पर अब वह विवश थी, भीतहरिणी की भांति क्योंकि मेरी साधना अब सफल हो चुकी थी, मैंने उसे क्यों मारा, वह मेरी समझ के बाहर था शायद ग्यारह दिनों तक उसने अत्याचार सहन करने का आक्रोश ही उस तमाचे के रूप में सामने आ गया था। अब मेरे सामने एक सौम्य स्त्री खड़ी थी। उसने मुझे आश्वस्त किया कि जब भी मैं कुछ प्रश्न पूछूंगा वह मेरा जवाब देगी और जीवन भर मेरी आज्ञाओं का पालन करेगी। इसके बाद तो मेरा जीवन ही बदल गया आर्थिक वृद्धि तो असाधारण रूप से हुई है। किसी को भी देखते ही उसका भूतकाल मेरे सामने स्पष्ट हो जाता है और वह मुझे त्रिकालज्ञ मान बैठता है। वास्तव में ही यह एक चमत्कारी साधना है जिसे सम्पन्न कर कोई भी गृहस्थ व्यक्ति सांसारिक दृष्टि से पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।